फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

★ Reflections on Marx's Critique of Political Economy
★ a ballad against work
★ Self Activity of Wage-Workers: Towards a Critique of Representation & Delegation

The books are free

नई सीरीज नम्बर 152 फरवरी 2001

हिसाबों-अंकुशों के पार

ग्यारह महीने पहले नेपाल स्थित गाँव से आनन्द गुरुँग दिल्ली आया। तीन महीने की भाग- दौड़ व जोड़- तोड़ के बाद ओखला फेज–1 में डी- 116 स्थित फैक्ट्री में आनन्द को नौकरी मिली। मन को कैद करते, तन को कैद करते घेरे सिमटे- सिकुड़े। फैक्ट्री में कम्प्युट्राइज्ड इम्ब्राइडरी का काम – रेशों व गर्द से फेफड़े लहुलुहान। आठ महीने भी नहीं बीते थे कि आनन्द की तबीयत खराब। कम्पनी ने उसके कई सहकर्मियों की ही तरह आनन्द की भी ई.एस.आई. नहीं करवाई थी। तेखण्ड " गाँव " की गलियों में डॉक्टरों से दवाईयाँ लेना और फैक्ट्री में काम करना। छह सौ रुपये खर्च, तबीयत ज्यादा खराब। नया- नया एक दोस्त आनन्द को एक महँगे डॉक्टर के पास ले गया – टी.बी. का शक, टैस्ट करवाओ। दोस्तों की मदद से आनन्द ने सरकारी अस्पतालों की भाग- दौड़ और धक्का- मुक्की झेली। बिस्तर पकड़ चुके आनन्द की नौकरी खत्म। जाँचों द्वारा टी.बी. की पुष्टि, कालकाजी अस्पताल में इलाज आरम्भ। आनन्द के दोस्तों द्वारा देख- भाल के संग- संग खर्च का भी प्रबन्ध। ज़माना ऐसा है कि पैसों के बिना जीने नहीं देता और पैसे बदले में जिन्दगी माँगते हैं, मन व तन की बलि लेते हैं।

हिसाब लगाना आज बहुत व्यापक है। वर्तमान तो टिका ही बही- खाते नुमा हिसाब- किताब पर है। सही- सटीक हिसाब को वैज्ञानिक कहते हैं। गलत हिसाब पर माथा पीटना .... और, सही हिसाब के बावजूद नुकसान होने पर कारगर अंकुशों की डिमान्ड।

हकीकत का यह एक पहलू है।

सिर- माथों पर बैठने वालों की सैंकड़ों, बल्कि हजारों वर्ष की कोशिशों के बावजूद अनन्त हैं बिना किसी हिसाब- किताब वाले इन्सानी रिश्ते। मनुष्य- मनुष्य में माँ- बच्चे से ले कर अजनबी लोगों के बीच प्रेमभाव; इन्सान की पशु- पक्षी- पेड़- पौधों से निजता- अपनापन; मिट्टी से स्नेह, पत्थर पर प्यार की थपकी।

हकीकत का यह दूसरा पहलू है।

जिसका हव्वा है

वर्तमान व्यवस्था है ही हिसाबों- अंकुशों का बोलबाला। बिना किसी भी अपवाद के, इसमें प्रत्येक का जीवन संकीर्णता व संकुचेपन को अभिशप्त है। ऐसे में, ऊपर से आये अथवा नीचे से, अधिक व कारगर अंकुशों की माँगें- बातें पीड़ितों के विलाप, नादानी के सिवा और कुछ नहीं हैं। और, अंकुशों पर केन्द्रित हो अंकुशों को ढीला करने- कम करने के प्रयास मर्ज की बजाय लक्षणों के इलाज हैं। अंकुश तो हिसाबों के पूरक मात्र हैं, जितने ज्यादा व सटीक हिसाब लगेंगे उतने ही अधिक व धारदार अंकुश होंगे।

हिसाबों- अंकुशों की जुगलबन्दी से पार पाने और इन्सानी रिश्तों- मानवीय सम्बन्धों की रचना- विस्तार के लिये आइये साँझेदारी बढायें। इस सिलसिले में अनुभवों- विचारों के आदान- प्रदान द्वारा यहाँ शुरू की जा रही चर्चा में साँझेदारी आमन्त्रित है। विचार- विमर्श को सीरीज का रूप देने की कोशिश करेंगे।

खुद को काटो, दूसरों को काटो

आरम्भ के लिये आइये एक फिकरे को थोड़ा विस्तार से देखें। फिकरा है: " निज अनुशासन तब प्रशासन"। एक दोस्त ने इसका अर्थ बताते हुये कहा: स्वयं पर नियन्त्रण रखोगे तभी दूसरों पर राज करोगे। दोस्त द्वारा बताया फिकरे का अर्थ सही है अथवा गलत, यह गौण बात है। तन्त की बात है: खुद को जितना ज्यादा काटोगे उतना ही ज्यादा दूसरों को काटने के योग्य बनोगे। और, यह सीढीनुमा समाज व्यवस्थाओं का, ऊँच- नीच वाली व्यवस्था का, अमीर- गरीब वाले निजाम का एक सूत्र- वाक्य लगता है।

अपने मन को मारना, अपने तन को तानना ताकि... ताकि दूसरों के तन- मन को मार सकें! कितना व्यापक है यह! प्रत्येक को छलनी करते अनुशासन- प्रशासन के चक्रव्यूह की निर्ममता के अहसास के लिये बच्चों के जीवन पर निगाह- भर डालना पर्याप्त है।

बच्चों का मोल-तोल

बच्चों की भलाई के नाम पर बच्चों को कूटने- पीटने- डाँटने- पुचकारने- बहकाने में कोई कमी बची है क्या? कूटने अथवा बहकाने अथवा कूटने- बहकाने के सही मिक्सचर के दायरों में बड़ों की सड़ियल गूढ- गम्भीर चर्चायें बहुत तकलीफदायक हैं। नाते- रिश्तेदार हों अथवा अध्यापक- विद्वान, बच्चों को लायक बनाने, बच्चों को सफल बनाने के लिये बच्चों की दुर्गत करने को जायज ठहराते हैं। कई बार तो कहते हैं कि मन नहीं करता पर फिर भी बच्चों के भले के लिये यह सब करते हैं और .... और बच्चे जब बड़े हो जायेंगे तब समझ जायेंगे!

लायक बनाने, सफल बनाने का मतलब क्या है? बड़े होने पर मँडी में ऊँचे भाव लगने के सिवा यह और भी कुछ है क्या? अच्छा विद्यालय उसे कहते हैं जो बच्चों की मार्केट वैल्यू बढाये। आगे चल कर बच्चे की ऊँची कीमत लगे इसके लिये उसे महँगे स्कूल में डालने के वास्ते माता- पिता अपने पेट काटने, हाथ जोड़ने तक जाते हैं। लेकिन सवाल है: मँडी में व्यक्ति का ऊँचा भाव उसके लिये अच्छा जीवन है क्या? भावों में उतार- चढाव तथा उपयोगी- अनुपयोगी के फेर- बदल मँडी- मार्केट की प्रकृति है। डरते- भयभीत पुर्जे का जीवन, इस्तेमाल करो और फेंको – यूज एण्ड थ्रो मँडी का, भाव- तोल का, हिसाब- किताब का सार है। इसलिये एक तरफ बच्चों की दुर्गत और दूसरी तरफ बढती उम्र के संग- संग नये- नये कोर्स करना, बाल रँगना जीवन की, सफल जीवन की आज नियति है।

गौर कीजियेगा: यह कोई आकस्मिक बात नहीं है, यह अकारण नहीं है कि बच्चों को झिड़कते बड़ों का प्रिय शब्द "अनुशासन", मजदूरों के तन-मन को छलनी करती मैनेजमेन्टों का भी प्रिय शब्द है। इसलिये . ... इसलिये अपने अन्दर समाये विष को पहचानने और उसके उपचार की आवश्यकता भी है।

आज मची " नेकी कर और जूते खा " की हाय- तौबा के बावजूद लगता है कि विगत की "नेकी कर और कूये में डाल" को हम परस्पर प्रेम- आदर- सहयोग वाली समाज रचना के लिये एक प्रस्थान- बिन्दू के तौर पर ले सकते हैं। (जारी)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

खतों से -

दर्द ही दवा
कुछ हौसला रख
दिन फिरेंगे।

— आनन्द ,, बालाघाट

... जनता एवं मजदूर इस प्रशासन से तँग हो कर मंत्रियों के पास पत्र भेजती है तथा मंत्रालय उत्तर देना- दिलाना तो दूर, उसकी पावती तक भी सामान्यतः नहीं देते। ... मैं, विद्याधर ... रेल प्रबन्धक कार्यालय इलाहाबाद के अधीन विद्युत विभाग में प्रधान लिपिक पद पर कार्यरत था। मैं राजभाषा सम्बन्धी आदेशों के कार्यान्वयन हेतु केन्द्रिय सचिवालय हिन्दी परिषद के पदाधिकारी के रूप में भी प्रयासरत था। तमाम लोगों का प्रत्यावेदन भी तैयार करता था, प्रतिवाद सलाहकार का भी कार्य करता था। रेल प्रशासन ने मुझे भी समय- समय पर चार्जशीट दी तथा उनके सम्बन्ध में प्रक्रिया एवं न्याय की हत्या करके दण्डित किया। सन् 1997 में मुझे अनिवार्य सेवा निवृति का दण्ड दिया। महाप्रबन्धक उत्तर रेलवे के पास लम्बित रिवीजन अपील दिनांकित 19 मार्च 98 का अभी तक कोई उत्तर मुझे नहीं दिया गया है।

— विद्याधर, इलाहाबाद

.... वर्तमान में सबसे ज्यादा गोद व माँग सूनी हो रही हैं, बच्चों के आसरे व बहनों के भाई छीने जा रहे हैं .... सरकारें राजधानी में बैठ कर हवाई सर्वेक्षण कर अथवा एयरकन्डीशन कमरों में गुफ्तगु कर रही हैं कि 'कुर्सी का बचाव कैसे बना रहे'। इन्हें क्या पता मजदूर का दुख क्या है। 'सागर की लहरों से पूछो, उनकी तटों से हुई कितनी तकरार'।

— राजाराम, लालगढ, बीकानेर

बाजारवाद में .... स्थिति काफी खराब हो गयी है। .... एकजुटता, परिश्रम और ईमानदारी अब किताबी हो रहे हैं। ... पूँजी ने हम पर कस कर नैतिकता/अनैतिकता का हथौड़ा मारा है। हम मशीन बन गये हैं। ....

— कलाधर, पूर्णिया

तू इतनी कठोर न होना
(भूकम्प के झटके शुरू हो गये हैं)
जितनी वर्तमान है
मानव को मानवता का ज्ञान तुम देना
हे इक्कीसवीं सदी
तुम प्रेम से
मानवता को जीवित रखना।

— प्रताब, अजमेर

श्रम इन्सपैक्टर, श्रम कमिश्नर, श्रम मन्त्रालय [illegible] के बावजूद भी श्रम समस्यायें क्यों हल नही हो पाती ? .... यहाँ नोएडा में अनेकों फैक्ट्रियों का लगाने के लिये तो प्लाट दिये जाते हैं किन्तु कभी ऐसी योजना पर विचार नहीं किया गया कि हर फैक्ट्री वाले को श्रमिकों के लिये प्लाट और आवास लेने की शर्त भी रखी जाये, चाहे वह आसान किश्तों में ही क्यों न हों। परिणाम होता है झुग्गियाँ, झोंपड़ियाँ, बार- बार उजड़ना और बसना।

— महेश, नोएडा

मजदूरों को मजदूरी करना बन्द कर देना चाहिये .....

— राजीव, अशोकनगर, गुणा

श्रम को प्रणाम, श्रमजीवी को प्रणाम और, श्रम के भगीरथ प्रयास को प्रणाम है।

— कवीश, शाहजहाँपुर

... जरूरत है मजदूर बस्ती की हर गली में ल्हासियों के शक्ति केन्द्र जन्म लें, पलें- बढें तथा मार्गदर्शक एवं निर्णायक शक्ति देने वाले बनें। ... विचार मंथन से अमृत प्राप्त हो।

— सुमेर सिंह, नीम का थाना, सीकर

कम्पनियाँ किसी की नहीं होती

एस्कोर्ट्स वरकर : " मजदूरों ने छँटनी के जाल में फिर छेद कर दिये। इस पर मैनेजरों से छँटनी की प्रक्रिया शुरू करने का फिर फैसला। रिजाइन के लिये दबाव के वास्ते फस्ट प्लान्ट और फार्मट्रैक के 15 मैनेजरों को एग्रो ग्रुप के बड़े साहब द्वारा फील्ड ट्रान्सफर। ज्यादातर सीनियर मैनेजर हैं, 50 वर्ष की आयु के दायरे में हैं — एक बेचारा तो 54- 55 का है, नौकरी के 2- 3 साल ही बचे थे। इन्हें दो महीने की ट्रेनिंग देंगे — सारी उम्र प्रोडक्शन में निकाल दी, अब मार्केटिंग सिखायेंगे! चर्चा है कि इन 15 के बाद अन्य मैनेजरों तथा सुपरवाइजरों पर हमला होगा। मैनेजरों के चेहरे लटके हुये हैं, एक मैनेजर ने कहा : किसी को भरोसा नहीं है कि कल सुबह ड्युटी रहेगी या नहीं। डरा- पुचकार- भड़का कर बड़े पैमाने की छँटनी योजना को एस्कोर्ट्स मजदूर चार साल से फेल करते आ रहे हैं। परेशान- अपमानित कर इस्तीफे लिखवाने की स्कीम को एस्कोर्ट्स के सुपरवाइजर और मैनेजर भी कुछ समय पहले बखूबी फेल कर चुके हैं। यह दूसरा राउन्ड है।"

और बातें यह भी

डिप्लोमा होल्डर : " ट्रेनिंग दे रहे हैं, बाद में ग्रेड दे देंगे कह कर शुरू में बहुत कम पैसे देते हैं। बेवकूफ बनाते हैं। छह महीने हो गये हैं और ग्रेड का जिक्र करता हूँ तो टाल जाते हैं। मन नहीं करता पर रोटी- पानी फँसती है इसलिये 1500 रुपये महीना पर नौकरी करनी पड़ रही है।"

सेक्युरिटी गार्ड : " मैंने 14 साल होम गार्ड में ड्युटी दी। हम 8000 होम गार्डों को बिना किसी कारण और बिना कुछ दिये सरकार ने निकाल दिया जबकि हम में से कई की 10- 12- 14- 17 साल की सर्विस थी। मैं तो किसी तरह लग गया हूँ अन्यथा इस उमर में अब नौकरी नहीं लगती। रोटी के लाले पड़े हैं और परेशान हो कर हम में से कुछ ने आत्महत्या कर ली है।"

ठेकेदार : " फैक्ट्री में वरकर था और 15 साल से नौकरी कर रहा था। कम्पनी की चाल में आ गया और कन्ट्रैक्टर बन गया। दो- चार मशीन दे रखी हैं कि उन पर काम करवाऊँ। पेमेन्ट टाइम पर नहीं देते और पैसा फँसता जा रहा है। बुरा हाल है पर कहने में भी शर्म लगती है। वास्तव में कम्पनी किसी की नहीं होती।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद—121001

कानून—कानून—कानू....

सुपर ऑयल सील मजदूर : " नवम्बर व दिसम्बर की तनखायें आज 15 जनवरी तक मैनेजमेन्ट ने नहीं दी हैं।"

गुडईयर वरकर : " हम कैजुअल वरकरों की तनखा में से ई.एस.आई. के पैसे काटती है पर हमें ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये जाते।"

चन्दा इन्टरप्राइजेज मजदूर : " ठेकेदारों के जरिये मैनेजमेन्ट ने जिन 100 मजदूरों को रखा है उन्हें 1000- 1100 रुपये वेतन दिया जा रहा है। कैजुअल वरकरों के रूप में मैनेजमेन्ट ने 60 को रखा है और उन्हें 1250- 1350 रुपये तनखा देती है। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 50 परमानेन्ट मजदूरों को ही।"

अमेटीप मशीन टूल्स वरकर : " आज 16 जनवरी हो गई है और अभी तक दिसम्बर की तनखा हमें नहीं दी है। मशीनें बेचने की मैनेजमेन्ट की तिकड़म पर अदालती ब्रेक।"

बालाजी मजदूर : " सोहना रोड़ स्थित फैक्ट्री में हम भट्टियों की ईटें बनाते हैं। काहे को ई.एस.आई. और काहे का फण्ड ? 12 घण्टे रोज खटने के लिये महीने के 1700- 2100 रुपये।"

शिवालिक ग्लोबल वरकर : " हर रोज 12 घण्टे ड्युटी करवाते हैं और महीने के तीसों दिन ड्युटी करना अनिवार्य बना रखा है — बदले में 2400 रुपये देते हैं।"

सुपर सील मजदूर : " नवम्बर का वेतन 19 दिसम्बर को जा कर दिया। आज 13 जनवरी तक दिसम्बर की तनखा नहीं दी है।"

रेनसन वरकर : " सैक्टर—27 बी स्थित फैक्ट्री में रोज 10 घण्टे ड्युटी पर महीने के 1915 रुपये तनखा बनाते हैं और इनमें से ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के पैसे काटते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। श्रम विभाग और फण्ड वालों के छापे तो अपने आप में घोटाले थे।"

आटोपिन मजदूर : " आज फरवरी शुरू हो गई है लेकिन इन्डस्ट्रीयल एरिया प्लान्ट में मैनेजमेन्ट ने दिसम्बर का वेतन भी हमें अभी तक देना आरम्भ नहीं किया है। ऊपर से, ड्युटी के बाद रोज जबरन रोक लेती है और ओवर टाइम काम करवाती है लेकिन 9 महीनों के ओवर टाइम के पैसे मैनेजमेन्ट ने नहीं दिये हैं।"

हेराफेरी-टुच्चेपन की सीमा नहीं

खण्डेलवाल प्रा. लि. वरकर : " 68 सैक्टर–6 स्थित फैक्ट्री में 100 मजदूर हैं। ई. एस.आई. कार्ड और फण्ड की पर्ची किसी को नहीं। हैल्परों को 1200 रुपये महीना वेतन देते हैं। डायरेक्टर आर.एस. अग्रवाल जब चाहे वरकर को निकाल देता है। मैं, अवधेश, 9.9. 97 को लगा था और 15.9.2000 को मुझे अचानक निकाल दिया। डेढ महीने की मेरी तनखा भी नहीं दी। मैंने 4.10.2000 को श्रम विभाग में मामला दर्ज किया। अब तक 13 तारीख पड़ चुकी हैं और कल 18.1.2001 को फिर तारीख है। मैनेजमेन्ट सिर्फ दो तारीखों पर आई है – पहली तारीख पर बोली कि मैं उसका वरकर ही नहीं हूँ और दूसरी तारीख पर बोली कि मैंने सिर्फ 4 दिन ट्रायल पर काम किया था।"

लेबर कोर्ट वकील : "मजदूरों को न्याय मिल ही कैसे सकता है ? कानून की धारा – 36 कहती है कि लेबर कोर्ट में कम्पनी की तरफ से कोई वकील पेश नहीं होगा लेकिन व्यवहार में इसके बिल्कुल विपरीत होता है – हर कम्पनी की तरफ से वकील ही पेश होते हैं। इतना ही नहीं, वकील लोग तारीख पर तारीख का खेल खेलते हैं। थैली- उपहार द्वारा पुचकारने और मन्त्री- स्तर की सिफारिशों से भी कभी- कभार कोई जज काबू में नहीं आता तथा कानून के अक्षर पर चलने की कोशिश करता है तो वकील लोग गिरोह का रूप धारण कर लेते हैं। साल- भर में ही सैक्टर–9 स्थित लेबर कोर्ट में ऐसी गिरोहबाजी द्वारा जज के साथ दो बार गाली- गलौच की जा चुकी है।"

सुपर फैशन मजदूर : "जब काम तेजी पर होता है तब फैक्ट्री में 2500 मजदूर हो जाते हैं – आधों को मैनेजमेन्ट कैजुअल के रूप में रखती है और आधों को ठेकेदारों के जरिये। ठेकेदारों के जरिये रखों को मैनेजमेन्ट 1300- 1400- 1500 रुपये वेतन देती है। और, जिन कैजुअलों को 6 महीनों से ज्यादा रखती है उनके नाम बदल देती है – मैनेजमेन्ट राम को रहीम बना देती है। ई.एस.आई. कार्ड नहीं और निकाल देने पर प्रोविडेन्ट फण्ड निकालने का फार्म मैनेजमेन्ट भर कर ही नहीं देती।"

एलसन कॉटन वरकर : "हम 855 परमानेन्ट और 500 बदली वरकर धागे बनाते थे। तीन साला एग्रीमेन्ट का टाइम था – 9 जुलाई 95 को तालाबन्दी। मैनेजमेन्ट- यूनियन- श्रम विभाग के बीच अगस्त 95 में ही समझौता हो गया था लेकिन फिर भी आज तक तालाबन्दी नहीं उठाई है। कम्पनी का मैनेजिंग डायरेक्टर डी. के. हाँडा कहता था कि हमारे पास पैसे नहीं हैं और बैंक कर्ज देंगे तब फैक्ट्री खोलेंगे। कम्पनी 1990 से बीमार घोषित है और बैंकों के पहले ही 11 करोड़ रुपये कम्पनी पर कर्ज हैं। बिजली के 24 लाख रुपये के बिल बकाया थे, जुलाई 95 में ही बिजली वालों ने लाइन काट दी और मीटर उतार ले गये। तब से 100- 125 वरकर बिना बिजली कम्पनी क्वाटरों में रहते हैं, वहाँ गाय- भैंस- बकरी रखते हैं, झुग्गियाँ बना ली हैं। स्टाफ क्वाटरों में भूत वास करते हैं। दरअसल, परेशानी बढा कर मजदूरों को दो- दो पैसों में भागने को राजी करने और फैक्ट्री बिल्डिंग के संग- संग 21 किले जमीन बेच कर वारे- न्यारे के लिये मैनेजमेन्ट पता नहीं किस- किस से सौदेबाजी कर रही है।"

अप्रेन्टिस : "आई.टी.आई. ने हमें सीखने भेजा है लेकिन **क्लच आटो** मैनेजमेन्ट हमें उत्पादन में जोतने के लिये जबरदस्ती कर रही है। हम अप्रेन्टिसों का भत्ता सरकारी खाते में से आता है और मुफ्त में मिले मजदूरों की तरह हमें इस्तेमाल करने के चक्कर में मैनेजमेन्टें रहती हैं।"

झालानी टूल्स मजदूर : "मैं, ब्रह्म प्रकाश, 10.5.99 को रिटायर हुआ। इक्कीस महीनों की बकाया तनखायें, बरसों के बकाया बोनस- एल टी ए आदि तो मुझे दिये ही नहीं हैं, रिटायर हुये डेढ साल से ऊपर हो गया है पर ग्रेच्युटी- सर्विस के पैसे भी मैनेजमेन्ट ने मुझे नहीं दिये हैं। इस उम्र में भी नौकरी ढूँढने की मजबूरी है। लेकिन जहाँ भी नौकरी के लिये जाता हूँ वहीं कहते हैं कि बाबा इस उम्र में माला हाथ में ले लो – यह उम्र आराम करने की है, काम करने की नहीं।"

फर आटो वरकर : "तनखा के लिये परमानेन्ट वरकरों को भी खूब खींच- तान करनी पड़ती है। कैशियर कहता है कि परसनल अफसर के पास जाओ और परसनल अफसर कहता है कि कैशियर के पास जाओ। हर महीने वेतन देर से देते हैं – आज 16 जनवरी तक दिसम्बर की तनखा नहीं दी है। इतना ही नहीं, ठेकेदार के जरिये रखे एक मजदूर की उँगली कट गई – मैनेजमेन्ट ने प्रायवेट इलाज करवाया क्योंकि उसकी ई.एस.आई. नहीं करवाई थी। और, इलाज के दौरान वरकर को जो 200 रुपये दिये थे वे भी उसकी तनखा में से काट लिये।"

के. आर. रबराइट मजदूर : "37 सैक्टर–6 में 50 मजदूरों को 8 घण्टे ड्युटी के 1400- 1800- 2000 रुपये महीना वेतन, ई. एस. आई. कार्ड और पी.एफ. की पर्ची दी है लेकिन .... लेकिन फण्ड की पर्ची पर के. आर. रबराइट लिखा है और ई.एस. आई. कार्ड पर गणेश इन्टरप्राइज! असल में, गेट पर के. आर. रबराइट का बोर्ड है और अन्दर तीन अन्य : जगदम्बा, गणेश इन्टरप्राइज व कृष्णा इंजिनियरिंग कम्पनियाँ भी बना रखी हैं। पचास कार्ड वालों के अलावा 70 को कैजुअल कह कर लगा रखा है जिन्हें 11 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी के लिये महीने में 1100- 1500 रुपये देते हैं, ई.एस. आई. कार्ड नहीं व पी.एफ. नहीं – एक्सीडेन्ट होने पर पहले प्रायवेट में ले जाते हैं और फिर दो- चार दिन की भर्ती दिखा कर ई.एस.आई. में इलाज करवाते हैं। और फिर, ठेकेदार के जरिये 25 वरकर रखे हैं जिन्हें 12 घण्टे रोज ड्युटी करनी पड़ती है तथा बदले में 2000 रुपये देते हैं।"

आटोपिन्स वरकर : "15/7 मथुरा रोड़ फैक्ट्री में ई.एस.आई. वालों ने 11 जनवरी को फिर छापा मारा। मैनेजमेन्ट ने उन्हें गेट के बगल में टाइम आफिस में बैठाया। रजिस्टर दिखाने तथा ठण्डा- गरम का खेल हुआ। गेट से दूर स्थित फैक्ट्री- बिल्डिंग से इस दौरान मैनेजमेन्ट ने मजदूरों को खदेड़ा। दीवाली से पहले छापे के वक्त भी मैनेजमेन्ट ने पीछे के गेट, मैटेरियल गेट से मजदूरों को बाहर निकाल दिया था। इस बार भी वैसा ही किया। जो दो- चार मजदूर किसी कारण छूट गये थे उनके नाम आदि छापा मारने वाले लिख कर ले गये। बन्द मशीनों और बन्द मशीनों के पास तैयार- तैयारी की प्रक्रिया में माल को देख कर कोई भी बता सकता है कि फैक्ट्री में कितने मजदूर काम करते हैं। लेकिन. ... लेकिन छापा मारने वालों की आँखों पर नोटों की पट्टियाँ होती हैं इसलिये उन्हें दीखता नहीं है। चौबीसों घण्टे फैक्ट्री चलती है और 250 इम्पलाई हैं जिनमें से स्टाफ के 50 को ही मैनेजमेन्ट दिखाती है – 200 मजदूरों को दिखाती ही नहीं! छापे वाले 12 बजे तक रहे और उनके जाने के बाद मैनेजमेन्ट पार्क से हमें फैक्ट्री में ले गई।"

मैनेजमेन्टों की लगाम

हर कार्यस्थल पर हजारों तार होते हैं; हजारों नट- बोल्ट होते हैं; नालियाँ- सीवर होते हैं; कई- कई ऑपरेशन होते हैं; रात- दिन को लपेटे शिफ्टें होती हैं। इसलिये मैनेजमेन्टों को रोकने- डाटने के लिये मजदूरों के हाथों में कारगर लगाम हैं: ✱ पाँच साल दौड़ने वाली मशीनें छह महीनों में टें बोल दें; ✱ कच्चा माल- तेल- बिजली उत्पादन के लिये आवश्यक मात्रा से डेढी- दुगनी इस्तेमाल हो; ✱ ऑपरेशन उल्टे- पल्टे हो कर क्वालिटी को गँगा नहा दें; ✱ बिजली कभी कड़के, कभी दमक, कभी आँख- मिचौनी करने मक्का- मदीना चली जाये; ✱ अरजेन्ट मचा रखी हो तब ऐसे ब्रेक डाउन हों कि साहबों को हृदय रोग हो जायें।

बिना किसी प्रकार की झिझक के, शान्त मन से, ठन्डे दिमाग से सोच- विचार कर कदम उठाने चाहियें।

जिन्दा लोग

तमिलनाडु के मदुरई जिले के थेनी क्षेत्र में 19 गाँवों का एक समूह है जहाँ के लोगों ने 40 सालों में एक बार भी पुलिस के दरवाजे नहीं खटखटाये। इन गाँवों में न अपराध होते हैं और न झगड़े। लोग अपने विवाद स्वयं सुलझा लेते हैं। लोगों का मत है कि सड़क–स्कूल–परिवहन के साधन समस्याओं के साधन हैं। इन 19 गाँवों में सड़क नहीं है, स्कूल नहीं है, परिवहन के साधन नहीं हैं। सरकार के बिना लोग सुखी रहते हैं।

{सामग्री 'आशा की किरण (दो)' – मदन मोहन, अपना राज आन्दोलन, अजन्ता रोड़, रतलाम – 457001 से ली है।}

अन्दर घुसा जहर

उषा टेलिहोइस्ट मजदूर : "तालाबन्दी उठाने पर हड़ताल को क्या कहें? इसे लीडरों की बेवकूफी मात्र कहें क्या? मैनेजमेन्ट 100 की छँटनी की इजाजत सरकार से लाई पर हाई कोर्ट ने रोक दिया था, स्टे दे दी थी। पाँच महीनों की तालाबन्दी- हड़ताल के बाद अब ऐसे मैनेजमेन्ट- यूनियन समझौते के तहत हम फैक्ट्री में गये हैं कि 140 की नौकरियाँ गई – 138 की छँटनी, एक की मृत्यु हो गई और एक रिटायर हो गया।"

साधु फोरजिंग वरकर : "25 सैक्टर प्लान्ट का तो पता नहीं पर 24 सैक्टर वाले प्लान्ट में तो हम पगला गये हैं – हर मजदूर दूसरे मजदूर से ज्यादा काम करने में इस बुरी तरह भिड़ा है कि उत्पादन के रिकार्ड तोड़े जा रहे हैं। अपने पैर काटने में लगे लोगों को कौन समझाये? हमारी शामत आई है।"

एन. एम. नागपाल प्रा. लि. मजदूर : "फैक्ट्री में 105 परमानेन्ट थे। रिटायरमेन्ट के निकट मजदूरों को मैनेजमेन्ट ने लालच दिया। बुजुर्ग मजदूरों ने ऐसी हवा बनाई कि मैनेजमेन्ट ने वी.आर.एस. के जरिये परमानेन्ट घटा कर 20 कर दिये। तीन तरह के कैजुअल वरकर भर्ती कर अब 150 मजदूर फैक्ट्री में काम करते हैं। कुछ कैजुअलों को 1550 रुपये, कुछ को 1650 और कुछ को 1800 रुपये वेतन देते हैं। कैजुअलों को बोनस नहीं देते, ओवर टाइम पेमेन्ट सिंगल रेट से, ई.एस.आई. कार्ड नहीं, फण्ड की पर्ची नहीं।"

झालानी टूल्स वरकर : "मामला कम्पनी के चलने अथवा नहीं चलने का नहीं है। बल्कि मामला यह है: अपने पैसों को डुबोने देने से रोकना है अथवा डुबोने में मदद करना है। कम्पनी 1987 में बीमार घोषित की गई थी और 13 साल बी.आई.एफ.आर. की छत्रछाया में स्वस्थ करने की आड़ में लूटपाट चली है। मजदूरों के ग्रेच्युटी- सर्विस के पूरे पैसे मैनेजमेन्ट खा गई। 1994 से मजदूरों के प्रोविडेन्ट फण्ड खातों में मैनेजमेन्ट ने पैसे जमा ही नहीं करवाये। जनवरी 96 से दिसम्बर 2000 के बीच 30 महीनों की तनखायें तो मैनेजमेन्ट ने मजदूरों को दी ही नहीं। इस दौरान जिन 30 महीनों की तनखायें दी उनमें मैनेजमेन्ट ने भारी कटौतियाँ की हैं। कुल मिला कर इन 5 साल के दौरान झालानी टूल्स मजदूर को औसतन 500 रुपये प्रतिमाह से भी कम पड़ा। बेहाल तन- मन, तार- तार कपड़े, टूटी चप्पल- टूटी साइकिल और घर- परिवार में कलह में यह साफ- साफ दीखता है। बोनस- एल टी ए- वर्दी का तो हिसाब ही भूल गये। लूट पर पर्दा डाले रखने के लिये मैनेजमेन्ट फैक्ट्री के अन्दर गुण्डागर्दी करती रही है। इस सिलसिले में कम्पनी की सम्पत्ति 40 करोड़ रुपये ही बची है जबकि फरीदाबाद प्लान्टों के 2000 मजदूरों के ही 70 करोड़ रुपये कम्पनी पर बकाया हैं और इतने ही कुण्डली, औरंगाबाद व जालना प्लान्टों के दो हजार मजदूरों के हैं। बैंकों के कर्ज आदि अलग से हैं। बरसों से बैंकों को ब्याज तक नहीं दिये जाने पर ही बी.आई.एफ.आर. ने 17.7.2000 को कम्पनी को वाइन्ड अप करने का आदेश दिया। लेकिन मैनेजमेन्ट हर मजदूर के जो बनते हैं उनमें से दो तिहाई गड़प कर भी सन्तुष्ट नहीं है।

→

कहानी नहीं है यह

सराय ख्वाजा में कुछ फुर्सत से : "रेवाड़ी के पास गाँव है। यहाँ कई जगह काम कर चुका हूँ – सिफारिश के बिना कहीं नौकरी नहीं लगी और सिफारिशों के बावजूद ज्यादा दिन कहीं भी नहीं रखा। स्टोर का, कम्प्युटर का आदि कई काम भी सीख लिये हैं। अब जहाँ लगा हूँ वहाँ महीने के 1700 रुपये बताये थे पर इनमें से ही ई.एस.आई. तथा फण्ड के पैसे काट लेते हैं। बच्चे हैं, कमरे का किराया.... दाल- रोटी नहीं चलती। आज छुट्टी की है ताकि ओखला में एक परिचित के साथ नौकरी देखने जा सकूँ।

"शिवालिक ग्लोबल लिमिटेड में मैं आपरेटर था। हर रोज 12 घण्टे की ड्युटी तो वहाँ है ही, लगातार 24- 36- 48 घण्टे तक फैक्ट्री में जबरन रोक लेते हैं। एक बार मुझे 36 घण्टे लगातार काम पर रोका – गर्मी और पसीने से जाँघों पर लाल- लाल दाने हो गये। कच्छे तक से परेशानी होने लगी। 36 घण्टे बाद सुपरवाइजर ने 3- 4 घण्टे की छुट्टी दी और बोला कि खाना- वाना खा कर चले आना। पत्नी ने मेरा हाल देखा तो बहुत गुस्सा हुई और मुझे आराम करने को कहा। नहा- धो, खाना खा मैं लेटा ही था कि कम्पनी से दो आदमी कमरे पर पहुँचे और फैक्ट्री चलने को कहा। मैंने मना कर दिया। अगले दिन अपनी शिफ्ट में रात को ड्युटी के लिये पहुँचा तो पहले तो सुपरवाइजर उल्टा- सीधा बोला तथा मैं 12 घण्टे काम कर चुका तब 12 घण्टे और रुकने को बोला। मैंने अपनी हालत बता कर रुकने से इनकार किया तो सुपरवाइजर ने जबरन रोकने की कोशिश की पर मैं फैक्ट्री से निकल आया। अगले रोज ड्युटी पर पहुँचा तो मैनेजर ने बुलाया और डाँटने- डपटने लगा। मैनेजर बोला कि तुम ने सुपरवाइजर का कहना नहीं माना और सुपरवाइजर से गलत व्यवहार किया इसलिये नौकरी से अभी निकाल देता हूँ। मैनेजर मेरी एक बात भी सुनने को तैयार नहीं हुआ। परेशान मैं था ही, डिपार्टमेन्ट गया और रोटी का डिब्बा उठा कर चल दिया। इतने में मैनेजर पहुँचा और बोला कि ऐसे ही कहा था तुम तो सचमुच ही जाने लगे। आदमी इन्हें चाहियें ही और नौकरी करना मेरी भी मजबूरी है पर जहाँ रत्ती- भर इन्सानियत नहीं है वहाँ रुकना .... सोचते- सोचते मैं मुँह से कुछ कहे बिना फैक्ट्री गेट से बाहर निकल आया।"

अन्दर जहर....

बचे- खुचे एक तिहाई को हड़पने के लिये मैनेजमेन्ट थर्ड प्लान्ट तथा जगह- जगह की जमीन बेचने की फिराक में है और इसीलिये वह वाइन्ड अप आदेश के खिलाफ अपील कर रही है। अपील अभी तक सुनवाई के लिये एडमिट भी नहीं की गई है और मैनेजमेन्ट के पट्ठे वकील के जरिये दावा कर रहे हैं कि दो हजार मजदूर सम्पत्ति बेचने का समर्थन करते हैं। ऐसे में गालियाँ देने से कुछ नहीं होगा। हर मजदूर द्वारा अपने पैसों का दावेदार बनना तो जरूरी है ही, मजदूरों द्वारा यह लिख कर देना भी जरूरी है कि किन्हीं भी पट्ठों की यूनियन के सदस्य वे नहीं हैं। तभी जा कर झालानी टूल्स मजदूर अपने पैसों में से कुछ पाने की उम्मीद कर सकेंगे।"

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये।

★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये- पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं और 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें और अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।